शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक २८ : नई दिल्ली : १४-२० अक्टूबर २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५२ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा आदि श्रमणी ९१, सर्व १४३ जसोल में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्यवर ने साध्वी भीखांजी (लाडनूं) को ५ अक्टूबर को अनशन का प्रत्याख्यान कराया है। साध्वीश्री का अनशन प्रवर्द्धमान है। पूज्य आचार्यप्रवर उन्हें प्रतिदिन दर्शन देने हेतु उनके प्रवास स्थल पर पधारते हैं।

समझो पापों को-१२

आचार्य महाश्रमण

आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--**'कलह विवज्जणा'**--ऋषियों के लिए, साधुओं के लिए अपेक्षित है कि वे कलह का वर्जन करें। अठारह पापों में एक पाप है--कलह। अकेला आदमी होता है, वहां कलह की संभावना नहीं होती। अनेक व्यक्ति जहां साथ में रहते हैं, वहां कलह पैदा हो सकता है। जैन साधना पद्धति में एकाकी साधना का भी वर्णन आता है। ऐसे भी मुनि होते हैं, जो संघमुक्त एकाकी साधना करते हैं। पहले संघ में रहकर, फिर एकाकी भी कर सकते हैं। प्राचीन साहित्य में यहां तक आता है कि किसी आचार्य के मन में आ जाए कि मैं अकेला संघमुक्त होकर साधना करूं तो आचार्य भी अकेले रहकर साधना कर सकते हैं, परन्तु उनके लिए यह आवश्यक है कि वे पहले संघ की व्यवस्था करें। अपने शिष्य को तैयार कर उसे दायित्व सौंप दें और संघ को सन्देश दें कि मेरे पीछे यह है, सब साधु-साध्वियां इसकी आज्ञा में चलें। फिर आचार्य अकेले वहां से प्रस्थान कर देते हैं और संघ पीछे उन्हें देखता रहता है, जब तक वे आंखों से ओझल नहीं हो जाते। संघ के सदस्य सोचते हैं कि हमारे गुरुदेव कठिन मार्ग स्वीकार कर रहे हैं। संघीय जीवन या स्थविर कल्प की जो अनुकूल या सुविधापूर्ण स्थिति थी, उसे छोड़कर वे एकाकी साधना का पथ स्वीकार कर रहे हैं। एकाकी साधना हर कोई नहीं कर सकता। विशेष साधक ही एकाकी साधना के योग्य बन सकते हैं। सामान्यतया तो संघबद्ध साधना ही की जाती है। जहां दो हैं, वहां संघर्ष हो सकता है। चूड़ियां अनेक थीं तो आवाज आ रही थी, संघर्ष हो रहा था। एक ही रह गई तो कोई आवाज नहीं आई। मनुष्य भी अनेक साथ में रहते हैं तो आवाज आ जाती है। सात्त्विक प्रेम की आवाज आए तो दिक्कत नहीं, अपेक्षित आवाज आए तो दिक्कत नहीं पर कलह की आवाज आने लग जाती है तो कुछ कठिनाई की स्थिति पैदा हो जाती है।

उपशान्त कलह की उदीरणा करना, पुरानी बातों को उठाना, पुरानी बातों को याद करके फिर कलह पैदा कर देना अवांछनीय माना गया है। उपशान्त कलह की उदीरणा नहीं होनी चाहिए। झगड़ा होता है तो उसके पीछे कारण भी होता है। अहंकार टकराता है, ईगो में संघर्ष होता है, आवेग आ जाता है या सामने वाला मेरा अहित कर रहा है, ऐसा आभास होता है तो परस्पर कलह भी पैदा हो सकता है। पारिवारिक जीवन में कहीं-कहीं कलह देखने को मिलता है। भाई-भाई आपस में बोलते नहीं हैं। राम-लक्ष्मण कहलाने वाले भाई राम-रावण जैसे बन जाते हैं। मित्रों की मैत्री भी टूट जाती है। संस्कृत साहित्य में कहा गया है--

यूयं वयं वयं यूयम् इत्यासीन्मतिरावियोः।
किं जातमधुना येन, यूयं यूयं वयं वयम्।।

दो मित्रों के बीच एक समय यह भाषा चलती थी कि जो तुम हो, वह हम हैं और जो हम हैं, वह तुम हो। बाद में संबंध टूटा तो भाषा यह बन गई--तुम-तुम, हम-हम। जहां स्वार्थ प्रभावी होता है, वहां कलह को पैदा होने का मौका मिलता है। स्वार्थ की चेतना कलह उत्पत्ति का स्थान है। परार्थ की कामना हो, परहित की भावना हो तो कलह को पनपने से बचाया भी जा सकता है। भाई-भाई में तनाव हो जाता है, पति-पत्नी में तनाव हो जाता है। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के द्वारा नवदम्पति शिविर लगाया जाता है, ताकि जो नए दम्पति बने हैं, वे अपना दाम्पत्य जीवन सामंजस्यपूर्ण रख सके। दाम्पत्य जीवन में अशान्ति है, कलह है तो वह दुःखपूर्ण हो जाता है। अगर कोई दम्पति साठ-सत्तर वर्ष तक साथ में रहते हैं और प्रायः शान्ति में जीते हैं, झगड़ा-कलह नहीं होता है तो मैं उसे दाम्पत्य जीवन की साधना मानता हूं। अनेक युगल ऐसे मिल सकेंगे जो काफी शान्ति से जीने वाले हैं। अगर स्वार्थ हावी न हो और सहिष्णुता हो तो कलह से काफी बचा जा सकता है। परिवारों में सौहार्द और शान्ति का माहौल रहे। संयुक्त परिवार हो, चार-पांच भाई साथ में रहें, यह कुछ कठिन भी हो सकता है। परन्तु उनमें परस्पर वैमनस्य नहीं होना चाहिए। अलग-अलग रहते हुए भी एक भावात्मक सूत्रता के तार से जुड़े रहें तो वह एक तरह का संयुक्त परिवार का ही छोटा-सा रूप बन जाता है।

पिता के दो पुत्र थे। दोनों बेटे साथ में रह रहे थे। एक समय आया, जब पिता का देहावसान हो गया। दोनों भाइयों ने सोचा कि अब दोनों का परिवार बढ़ गया है, इसलिए अलग-अलग हो जाना चाहिए।, संपत्ति का बंटवारा कर लेना चाहिए। प्रेमपूर्वक बंटवारा हो जाए तो अच्छा है, बजाय इसके कि झगड़ा होने के बाद बंटवारा करना पड़े। दोनों भाई बैठे और एक-एक चीज बांटते गए। दो मकानों में एक-एक मकान दोनों ने ले लिया। इसी तरह दो दुकानों में से एक-एक दोनों ने ले ली। काफी चीजों का बंटवारा हो गया। शेष बचा घर का पुराना आदमकद दर्पण। वह बहुत कीमती था, इसलिए उसके प्रति दोनों भाइयों में आकर्षण था। बड़े भाई ने कहा, इसे मैं लूगा और छोटे भाई ने कहा मैं लूंगा। दोनों समझपूर्वक चलते तो कोई हल निकल सकता था, लेकिन परस्पर की खींचतान ने तनाव पैदा कर दिया। उस दर्पण को लेकर दोनों भाइयों में तीखी तकरार हुई और शीघ्र ही वह वैर में तब्दील हो गई।

किसी शुभचिन्तक ने उन्हें सलाह दी कि आपस में लड़ने की बजाय किसी तटस्थ व्यक्ति को मध्यस्थ क्यों नहीं बना लेते। वह जो निर्णय दे, उसे दोनों भाई स्वीकर करो। देनों को यह सलाह उचित लगी। दोनों ने सोचा कि हमारे मुनीमजी बुजुर्ग हैं, परिवार के हितैषी भी हैं। दो पीढ़ियों से हमारे परिवार की देखभाल करते आ रहे हैं। उनसे अच्छा मध्यस्थ और कौन हो सकता है? दोनों ने मुनीमजी को बुलाया। वयोवृद्ध मुनीमजी आए, परस्पर कुशलक्षेम पूछी गई। कुछ औपचारिक बातों के बाद बड़े भाई ने कहा--'मुनीमजी! आपको पता ही है कि हम दोनों भाइयों ने बंटवारा कर लिया है। प्रायः सभी चीजें बांट ली हैं। एक दर्पण को लेकर विवाद है। वह किसे मिले, इसका फैसला आप कर दें। आपका जो भी निर्णय होगा, वह हम दोनों को स्वीकार होगा।'

मुनीमजी ने कहा--'वह दर्पण तुम्हारे पिताजी के निर्देश से मैं ही खरीद कर लाया था। उसे तुम्हारे पिताजी ने जीवन भर संभाल कर रखा। कहां है वह दर्पण?'

दोनों भाइयों ने कहा--पिताजी के कमरे में है।'

मुनीमजी उस कमरे में गए, जहां वह बड़े आकार वाला दर्पण दीवार में फिट था। मुनीम जी ने उसे उतार कर हाथ में लिया, आंगन में आए और उस दर्पण को दोनों हाथों से ऊंचा उठाकर फर्श पर पटक दिया, कांच की किरचें बिखर गईं। दोनों भाई हतप्रभ रह गए। बोले--'आपने यह क्या किया?'

मुनीमजी ने कहा--'तुम दोनों भाइयों में फूट हो, इसकी अपेक्षा इस दर्पण का फूट जाना ज्यादा अच्छा है। मैंने इस परिवार को हमेशा अपना ही माना। मैं कांच की फूट तो देख सकता हूं, पर तुम दोनों भाइयों के बीच की फूट नहीं देख सकता, इसलिए दोनों के बीच में फूट का जो निमित्त था, उसे समाप्त कर दिया।'

आत्मा की दृष्टि से देखें तो कषाय का प्रयोग आत्मा के कर्मों का बंध कराने वाला है और सामाजिक दृष्टि से देखें तो परस्पर के संबंधों को तोड़ने वाला, जीवन में अशान्ति पैदा करने वाला है। वे परिवार अच्छे और महत्त्वपूर्ण होते हैं, जिन परिवारों में कलह जैसी स्थिति नहीं होती, परिवार के सभी सदस्य शान्ति से रहते हैं और अपने से बड़ों को सम्मान देते हैं। यह परिवार के लिए सुन्दर बात है। किसी-किसी परिवार में ऐसा देखने-सुनने को मिल सकता है कि परिवार के मुख्या ने या मां ने जो कह दिया, वह सबको मान्य होता है। कुछ परिवारों में ऐसी मर्यादा देखने को मिल सकती है, जहां एक को महत्त्व दिया जाता है और परिवार के सभी सदस्य उसकी बात को महत्त्व देते हैं। व्यक्ति की बात को महत्त्व भी तभी मिलेगा, जब वह सबके भले के लिए निःस्वार्थ भाव से चिन्तन करेगा। वह परिवार के किसी एक-दो सदस्य का पक्ष लेना शुरू करेगा तो अन्य सदस्यों में उसके प्रति सम्मान की भावना का होना कठिन होगा। पारिवारिक संबंध कलहविहीन हों, शान्तिपूर्ण हो, ऐसा प्रयास होना चाहिए।

कभी-कभी साधुओं में भी तनाव पैदा हो सकता है। साधुओं के लिए आगम वाङ्मय में संदेश दिया गया है कि साधु को तो विशेष रूप से कलह का विवर्जन करना चाहिए। उदारता हो तो कलह को उत्पन्न होने से रोका जा सकता है। छोटी-मोटी बातों को लेकर संकीर्णता नहीं आनी चाहिए। इससे साधना में अवरोध पैदा हो सकता है। साधु की वृत्ति उदार, सहिष्णु और सेवाभाव से युक्त होनी चाहिए। उसका चिन्तन होना चाहिए कि मैं दूसरों से ज्यादा सेवा न लेकर जितना हो सके, अपना काम स्वयं करूं, स्वावलंबी जीवन जीऊं। मेरा शरीर सक्षम है, समय है और अनुकूलता है तो मैं दूसरे से सेवा क्यों लूं? कोई वृद्ध हो, अक्षम हो, वह सेवा लेने की बात सोचे तो न्याय की बात है। कोई ऊंचे पद पर आसीन हो, वह सेवा ले तो यह भी न्याय की बात है। शेष जो सामान्य व्यक्ति हैं, जिनके पास समय है, कार्य करने में सक्षम हैं, उनको तो यथासंभव अपना काम स्वयं करना चाहिए। ज्यादा से ज्यादा सेवा देने और कम से कम सेवा लेने का प्रयास करना चाहिए। ऐसी भावना समूह के सदस्यों में होती है तो वहां कलह को पनपने से दूर रखा जा सकता है, क्योंकि सेवा की भावना कलह का प्रतिपक्ष है। जहां सेवा और सहिष्णुता की भावना होगी, वहां कलह को आने के लिए सौ बार सोचना पड़ेगा कि वहां जाऊं या नहीं?

आचार्य उमास्वाति ने तत्त्वार्थाधिगम सूत्र में कहा--'परस्परोपग्रहो जीवानाम्।' प्राणियों का परस्पर उपग्रह यानी आलंबन-सहयोग से काम चलता है। साधु संस्था में भी एक-दूसरे का सहयोग किया जाता है। गृहस्थों में भी एक-दूसरे के सहयोग से ही काम चलता है। एक परिवार में कोई कमाता है, कोई बाहर से जरूरी चीजें खरीद कर लाता है, कोई रसोई बनाता है। इससे परिवार का काम सुचारु रूप से चलता है। अगर कार्य विभाजन न हो, सब एक-दूसरे के काम में हस्तक्षेप करें, अपनी-अपनी चलाएं, मनमानी करें तो परिवार का चलना कठिन हो जाए। यह सेवा, सहिष्णुता और सामंजस्य की भावना साधु संस्था और गृहस्थ समाज के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। सेवा और सहयोग की भावना एक-दूसरे को निकट लाने वाली होती है, परस्पर के संबंधों को मजबूत करने वाली होती है। अगर सेवा से जी चुराया जाता है तो संबंधों में दुराव पैदा हो सकता है। कलह को उत्पन्न होने से रोकने के लिए स्वार्थ से दूर रहना, सेवा-सहयोग का भाव रखना अपेक्षित है। कलह के कारणों को निवारित करें तो कलहमुक्ति की बात निष्पन्न हो सकेगी।"

●

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जसोल में

व्यवसाय में नैतिकता, व्यवहार में अहिंसा

३ अक्टूबर। आज प्रातः राजस्थान प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष श्री अरुण चतुर्वेदी परमपूज्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में समुपस्थित हुए। पूज्यप्रवर का श्री चतुर्वेदी के साथ विभिन्न विषयों पर वार्तालाप हुआ। आचार्यवर ने उन्हें तेरापंथ के सार्वजनीन अवदानों की अवगति दी।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में श्री चतुर्वेदी ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा--'आचार्यश्री के पावन नेतृत्व में हम सभी मानवीय मूल्यों की अभिवृद्धि में अपना योगदान देते रहें।' स्थानीय तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर छाजेड़ ने श्री चतुर्वेदी का परिचय प्रस्तुत किया। मुनि विजयकुमारजी ने गीत का संगान किया। मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में मैत्रीपूर्ण व्यवहार की अभिप्रेरणा दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'मनुष्य का व्यवहार धर्म से अनुप्राणित होना चाहिए। इसके लिए उसके जीवन में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा अपेक्षित है। व्यवसाय में नैतिकता की देवी विराजमान रहे और व्यवहार में अहिंसा की देवी प्रतिष्ठित हो। व्यक्ति कटु, अप्रिय और असत्य वचन के प्रयोग से यथासंभव बचने का प्रयास करे। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से जनता के मानस परिवर्तन का प्रयास किया। उन्होंने भारत के विभिन्न प्रान्तों में पदयात्रा कर जनता को नैतिकता का सन्देश दिया। परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने सप्तवर्षीय अहिंसा यात्रा के माध्यम से अहिंसक और नैतिक चेतना के जागरण का प्रयास किया।

पूज्यवर ने आगे कहा--'नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा जीवन के लिए वांछनीय है। प्राणिमात्र के प्रति मैत्री का भाव हो और ईमानदारी के प्रति आस्था पुष्ट हो। सत्य परेशान तो हो सकता है, किन्तु परास्त नहीं हो सकता। नैतिक मूल्यों की बात सरकार और जनता दोनों के लिए आचरणीय है। राजनीति में भी मूल्यवत्ता रहनी चाहिए।'

कार्यक्रम में असीन्द से समागत कन्यामंडल ने गीत के माध्यम से अपने भावसुमन अर्पित किए। मध्याह्न में बाडमेर जिला कलक्टर श्रीमती वीणा प्रधान ने पूज्यवर के दर्शन किए। ज्ञातव्य है--श्रीमती प्रधान का जिला शिक्षा बोर्ड (माध्यमिक) के डायरेक्टर के रूप में स्थानान्तरण हो गया। बाडमेर जिले से विदा लेने से पूर्व वे पूज्यचरणों में पहुंचीं और पावन संबोध प्राप्त किया। आज आदर्श विद्या मंदिर, जसोल में 'अणुव्रत और नशामुक्ति' विषय पर मुनि मदनकुमारजी का वक्तव्य हुआ। लगभग साढ़े तीन सौ विद्यार्थियों ने विविध संकल्प स्वीकार किए।

अष्टदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर संपन्न

परमपूज्य आचार्यवर के मंगल सान्निध्य में प्रेक्षा फाउण्डेशन जैन विश्वभारती द्वारा समायोजित अष्टदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर आज संपन्न हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में सुश्री पूजा डोसी एवं रमेश जैन ने अपने शिविरकालीन अनुभवों को प्रस्तुति दी। श्री जीतमल गुलगुलिया ने अपने विचार व्यक्त किए। इस शिविर में आठ राज्यों के सत्तावन व्यक्ति संभागी बने। संभागियों को परमपूज्य आचार्यप्रवर ने प्रतिदिन ध्यान के प्रयोग करवाए। इसके अतिरिक्त साध्वीप्रमुखाजी, मुख्यनियोजिकाजी, शासनश्री मुनि किशनलालजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि जयकुमारजी, मुनि नीरजकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी एवं मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने प्रशिक्षण दिया। श्री राजेन्द्र मोदी, श्री जीतमल गुलगुलिया, श्रीमती विजया छल्लाणी प्रशिक्षण कार्य में सहयोगी रहे।

शासनश्री को दर्शन, कुलपति को मंगलपाठ

४ अक्टूबर। आज पूज्य आचार्यप्रवर साध्वीवृन्द के प्रवास स्थल पर पधारे और वहां संलेखनारत शासनश्री साध्वी भीखांजी (लाडनूं) को दर्शन दिए। चौविहार तपस्या के तीसरे दिन उन्होंने आचार्यवर से अनशन का प्रत्याख्यान करवाने की बलवती प्रार्थना की। पूज्यप्रवर ने उन्हें तेले का प्रत्याख्यान करवाया।

प्रवचन से पूर्व लाडनूं नगरपालिकाध्यक्ष श्री बच्छराज नाहटा ने पूज्यवर से जैन विश्वभारती के कुलपति के रूप में पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण किया। उल्लेखनीय है--जैन विश्वभारती द्वारा अनुशास्ता के

इंगितानुसार कुलपति का मनोनयन किया जाता है। श्री नाहटा जैन विश्वभारती के स्थापनाकाल से ही जुड़े हुए हैं। उन्होंने जैन विश्वभारती के विभिन्न पदों पर रहकर अपनी सेवाएं दी हैं।

सामाजिक कुरूढ़ियों पर प्रहार

प्रातःकालीन कार्यक्रम में प्रवचन से पूर्व राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री जसराज चोपड़ा ने सामाजिक कुरूढ़ियों के संदर्भ में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। श्री पारसमल गोलेच्छा ने श्री चोपड़ा का परिचय प्रस्तुत किया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में गार्हस्थ्य में भी संयम के विकास की अभिप्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने सामाजिक कुरूढ़ियों से मुक्त होने का आह्वान करते हुए कहा--'व्यक्तिगत स्तर पर संयम करना अच्छा है, किन्तु कुछ बातें सामाजिक स्तर पर लागू हो जाती हैं तो उनके पालन में सुगमता हो सकती है। समाज को चिंतन करना चाहिए कि तपस्या के उपलक्ष्य में भोज करना आवश्यक है क्या? मृत्यु के संदर्भ में भोज करने की अपेक्षा है क्या? मृत्यु हो गई तो नवकार मंत्र का जप तथा अच्छे धर्मग्रंथ का स्वाध्याय किया जा सकता है। साधु-साध्वियों के विशेष रूप से दर्शन किए जा सकते हैं, उनसे संबल प्राप्त किया जा सकता है। किन्तु मृत्यु के प्रसंग में बड़े स्तर पर भोज आदि करने का क्या औचित्य है?

इसी प्रकार तपस्या के संदर्भ में भी भोज होने की आवश्यकता है क्या? तपस्या के साथ रुपयों का लेन-देन उचित है क्या? तपस्या के साथ परिग्रह की बात क्यों रखी जाए? तपस्या निर्जरा के लिए होनी चाहिए। निर्जरा के साथ भोजन, परिग्रह आदि क्यों जुड़ें? इस पर श्रावक समाज को विचार करना चाहिए। जहां तक मृत्युभोज की बात है हम साधु-साध्वियों का पहले से ही नियम है कि जहां मृत्युभोज हो, वहां उस दिन साधु-साध्वियां गोचरी न करें।

मैं आज साधु-साध्वियों की उपस्थिति में समाज को प्रेरणा दूं, उसके साथ यह भी कहता हूं कि **जब तक नया निर्देश न मिले, तब तक तपस्या के संदर्भ में होने वाले भोज में गुरुकुलवासी और बहिर्विहारी साधु-साध्वियां गोचरी न करें।'**

पूज्यप्रवर की प्रेरणा से पण्डाल में उपस्थित अधिकांश श्रावक-श्राविकाओं ने भी आचार्यवर द्वारा उच्चरित संकल्प को यथाशक्ति यावज्जीवन अथवा पांच वर्ष के लिए स्वीकार किया। संकल्प की निर्धारित भाषा इस प्रकार है--

'मैं निम्नांकित संकल्प स्वीकार करता/ करती हूं कि--

१. मैं मृत्युभोज (उठावणे के दिन होने वाला भोज) का आयोजन नहीं करूंगा/करूंगी और दूसरों के द्वारा आयोजित ऐसे भोज में भोजन नहीं करूंगा/करूंगी।

(मृत्युभोज :- मृत्यु के संदर्भ में किया जानेवाला वह भोज, जिसमें रिश्तेदारों, संबंधियों व नजदीकी पड़ोसियों के अतिरिक्त अन्य जनों को निमंत्रित कर बुलाया जाता है)

२. मैं मृत्यु के संदर्भ में रूपयों का लेन-देन नहीं करूंगा/करूंगी।

३. मैं तपस्या के संदर्भ में रूपयों/आभूषणों, कपड़ों का लेन-देन नहीं करूंगा/करूंगी।

४. मैं तपस्या के संदर्भ में भोज का आयोजन नहीं करूंगा/करूंगी और न दूसरों के यहां भोज करवाऊंगा/करवाऊंगी। दूसरों के द्वारा आयोजित ऐसे भोज में मैं भोजन नहीं करूंगा/करूंगी।

उक्त संकल्प मेरे लिए स्थानीय स्तर पर मान्य होंगे।'

सामाजिक कुरूढ़ियों पर आचार्यवर के महत्त्वपूर्ण उद्‌गारों से समाज में सकारात्मक जागरूकता का वातावरण बना। समाचार पत्रों ने इसे प्रमुखता से प्रकाशित किया।

चिताम्बा पर अनुग्रहवृष्टि

आज के कार्यक्रम में चिताम्बा से समागत संघ की ओर से श्री सुरेश दक ने अपने विचार व्यक्त किए। उल्लेखनीय है--गत १८ दिसम्बर २०११ को अपनी मेवाड़ यात्रा के दौरान चिताम्बा प्रवेश पर पूज्यप्रवर ने चिताम्बावासियों पर अनुशासन करने के उपरान्त उन पर कृपावृष्टि करते हुए उन्हें दो बक्सीस प्रदान की थी--

१. भविष्य में जब कभी समाज के मुखिया व्यक्ति मुझसे साधु अथवा साध्वियों का चतुर्मास मांगेंगे, उन्हें बिना ननुनच किए एक बार चतुर्मास देने का भाव है।
२. भविष्य में यदि मैं मेवाड़ के भीलवाड़ा जिले की यात्रा करूंगा तो चिताम्बा में कम से कम चार दिन का प्रवास करने का भाव है।

चिताम्बावासियों ने आज अपने प्रथम बक्सीस की स्मृति कराते हुए साधु-साध्वियों के चतुर्मास की प्रार्थना की। पूज्यप्रवर ने अपने पूर्व प्रदत्त वचनानुसार घोषणा की--

'सन् २०१३ में साधुओं अथवा साध्वियों का चतुर्मास चिताम्बा में कराने का भाव है।'

चिताम्बावासियों ने मर्यादा महोत्सव प्रदान करने की प्रार्थना भी की। पूज्यवर ने उन पर अनुग्रह करते हुए घोषणा की--**'भगवान महावीर, आचार्य भिक्षु, गुरुदेव तुलसी, गुरुदेव महाप्रज्ञ का स्मरण करते हुए तथा साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी का अभिवादन एवं मंत्री मुनिश्री को वंदना कर यह कहना चाहूंगा कि द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, स्वास्थ्य आदि सब अनुकूल रहते हैं तो मेवाड़ में जब कभी यदि मैं मर्यादा महोत्सव करूंगा तो पहला मर्यादा महोत्सव चिताम्बा में करने का भाव है।'** आचार्यवर के मुखारबिन्द से यह घोषणा सुनकर चिताम्बावासी खुशियों से झूम उठे। वे आचार्यवर के अनुग्रह के प्रति श्रद्धाप्रणत थे।

कार्यक्रम में रतनगढ़ से समागत संघ की ओर से श्रीमती कमलादेवी आंचलिया तथा मोमासर से समागत संघ की ओर से पवन संचेती ने अपने भावों को प्रस्तुति दी। शासनश्री मुनि किशनलालजी ने मोमासर की प्रार्थना के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। रतनगढ़ में शासनश्री साध्वी रामकुमारीजी (लाडनूं) आदि साध्वियों की प्रेरणा से भरे गए ८७६ अणुव्रत तथा ५८६ नशामुक्ति के संकल्प पत्र पूज्यवर को भेंट किए गए।

मानसिक शान्ति का नाशक क्रोध

५ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति अपनी आत्मा को दोषों से बचाने का प्रयास करे। अनेक दोषों में एक है--क्रोध। जब क्रोध हमारे योग (मन, वचन, काया) में आ जाता है तो वह अधिक नुकसान करनेवाला होता है। क्रोध मानसिक शान्ति का भी नाश कर देता है। इसलिए व्यक्ति क्रोध से अपने आपको बचाने का प्रयास करे। जो कार्य प्रेम और शान्ति से हो सकता है, उसके लिए क्रोध क्यों करें? क्रोध करना बड़ी बात नहीं होती, उस पर नियंत्रण करना अच्छी बात होती है। क्रोध पर नियंत्रण आत्मा और व्यवहार दोनों दृष्टियों से हितकर होता है। व्यक्ति प्रयोग और पुरुषार्थ द्वारा क्रोध पर नियंत्रण करने का प्रयास करे, यह श्रेय का मार्ग है।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ। बेंगलुरु तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में समागत चित्तसमाधि यात्रा संघ, बेंगलुरु की ओर से अध्यक्ष श्रीमती लीला श्यामसुखा ने अपने विचार व्यक्त किए। बहनों ने गीत का संगान भी किया। बेंगलुरु महिला मंडल की ओर से २७५० प्रतिक्रमण, ५५३ बारहव्रत, २८०० चौदह नियम, १७८०५ कन्या भ्रूणहत्या निषेध आदि विविध संकल्प पत्र पूज्य चरणों में उपहृत किए गए।

पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'बेंगलुरु में साध्वी पीयूषप्रभाजी का चतुर्मास है। वे खूब अच्छा काम करती रहें। संकल्प पत्र काफी आए हैं। बेंगलुरु महिला मंडल की सदस्याएं अपना आध्यात्मिक विकास

करती हुई पवित्र कार्य करती रहें।' पूज्यप्रवर ने रतनगढ़वासिनी **श्रीमती सीरूदेवी सिंघी** तथा वाव निवासिनी **स्व.श्रीमती चम्पाबेन सिंघवी** की श्रद्धा-भक्ति का उल्लेख करते हुए उन्हें **'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति'** संबोधन से संबोधित किया।

साध्वी भीखांजी (लाडनूं) द्वारा तिविहार अनशन का स्वीकरण

परम पावन आचार्यप्रवर आज प्रवचन के उपरान्त साध्वियों के प्रवास स्थल (नया ओसवाल भवन) में पधारे। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने साध्वियों के साथ पूज्यवर की अगवानी की। आचार्यवर ने विराजमान होकर संलेखनारत साध्वी भीखांजी (लाडनूं) से सुखपृच्छा की। पूज्यवर ने प्रयाण गीत का संगान किया, तदुपरान्त साध्वी भीखांजी की बलवती भावना को विविध रूप में परखा। साध्वीश्री की बलवती भावना को देखकर पूज्यवर ने सक्कत्थुइ, वृहत् मंगलपाठ का उच्चारण, अरिहंतों, सिद्धों, पूर्वाचार्यों का स्मरण तथा साध्वीप्रमुखाश्री का अभिवादन कर ११.२९ बजे साध्वी भीखांजी को चौविहार अनशन का प्रत्याख्यान करवाया। उपस्थित सैकड़ों लोगों ने 'ऊं अर्हम्' का उच्चारण कर हर्षध्वनि की।

चौविहार अनशन : एक आगार मेरे मन में

६ अक्टूबर। परमपूज्य आचार्यप्रवर आज प्रातः भ्रमण के उपरान्त अनशनरत साध्वी भीखांजी को दर्शन देने पधारे। आचार्यवर ने उनसे सुखपृच्छा करते हुए भक्तामर के कुछ पद्य सुनाए। साध्वीजी ने पूज्यवर के प्रति सादर कृतज्ञता व्यक्त करते हुए चौविहार अनशन का प्रत्याख्यान कराने हेतु बलवती प्रार्थना की। पूज्यवर ने उनकी भावना की दृढ़ता को परखा। वे अपनी प्रार्थना पर अटल थीं। आखिर आचार्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखाजी, मंत्री मुनिश्री, मुख्यनियोजिकाजी आदि साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में मंगलपाठ का उच्चारण कर प्रातः ८.२८ पर फरमाया--'मैं मेरे मन पर एक आगार रख रहा हूं, जिसे अभी बताने का भाव नहीं है। इसके अतिरिक्त आपको (साध्वी भीखांजी को) देव, गुरु और धर्म की साक्षी से यावज्जीवन चारों आहार का त्याग है।' साध्वीश्री ने चौविहार अनशन स्वीकार करते हुए आचार्यवर के प्रति श्रद्धाप्रणति अर्पित की।

विकास में बाधक है अहंकार

६ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'चार कषायों में दूसरा है--मान। अहंकार का संस्कार व्यक्ति के साथ अनादिकाल से जुड़ा हुआ है। अहंकार वह तत्त्व है, जो विकास में बाधा उत्पन्न करता है। व्यक्ति अहंकार में मानों अन्धा बन जाता है। कई बार थोड़ी उपलब्धि पर ही वह अहं में चला जाता है। ज्ञान, धन, सत्ता आदि का अहंकार हो जाता है। अधूरा ज्ञान व्यक्ति को अहंकार की ओर ले जा सकता है। अपने अज्ञान को पहचान कर उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यप्रवर ने उपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा--'विद्याओं में अध्यात्म विद्या ऐसी है, जिसके अनुशीलन से विनय का विकास होता है। विद्या विनय से शोभित होती है। विद्यार्थियों में विनम्रता का विकास होना चाहिए। गुरु से ज्ञान प्राप्त करने हेतु विनय का विकास अपेक्षित होता है।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक उद्बोधन हुआ। राजनगर से समागत संघ की ओर से बोधिस्थल के श्री सुरेशचन्द कावड़िया ने अपने उद्गार व्यक्त किए। आज आसीन्द स्थित आचार्य महाप्रज्ञ इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस कालेज के चेयरमैन श्री रोशनलाल संचेती के नेतृत्व में कालेज प्रबन्धन, फैकल्टी और विद्यार्थियों सहित सवा सौ व्यक्ति पूज्य चरणों में पहुंचे। सी. एस. के चेयरमैन श्री आर. के. जैन ने इस संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। चूरू पदार्पण की प्रार्थना के साथ चूरू से समागत संघ की ओर से श्री तेजकरण

सुराना, श्री विमल सुराणा तथा श्री छतरसिंह डागा ने भावाभिव्यक्ति दी।

आज से आचार्यवर की पावन सन्निधि में राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान के तत्त्वावधान में अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों से संबद्ध छात्र-छात्राओं का द्विदिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम में संस्थान के अध्यक्ष श्री भीखमचन्द नखत, डा.हीरालाल श्रीमाली व श्री धर्मचन्द जैन ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस द्विदिवसीय अधिवेशन में सात राज्यों के १५० छात्र-छात्राएं संभागी बने। संभागियों को पूज्यप्रवर का पावन सम्बोध प्राप्त हुआ। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा ने भी विद्यार्थियों को प्रेरणा दी। इसके अतिरिक्त शासनश्री मुनि किशनलालजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि जम्बूकुमारजी (मिंजूर) ने प्रशिक्षण दिया। संस्थान के प्रशिक्षक भी इस कार्य में सहयोगी रहे।

संतोष में है सुख

७ अक्टूबर। प्रातः नगर के मनणावास स्थित बालोदय विद्या मंदिर के पास विभिन्न जाति व वर्गों के लगभग तीन सौ लोगों के बीच आचार्यप्रवर का उद्‌बोधन हुआ। उद्‌बोधन से प्रभावित होकर लगभग बीस लोगों ने नशा छोड़ने का संकल्प स्वीकार किया। पूर्व सरपंच श्री भगवतसिंह ने शराब पीने की वर्षों पुरानी लत को त्याग दिया। आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व व पश्चात् मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि पृथ्वीराजजी एवं मुनि जितेन्द्रकुमारजी के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। आभारज्ञापन श्री कान्तिलाल ढेलड़िया ने किया।

वीतराग समवसरण में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में 'मूल्य इच्छा परिमाण का' विषय पर मंगल प्रवचन करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'इच्छा आकाश के समान अनंत होती है। आकाश जैसे अमाप्य है, वैसे ही इच्छा भी अमाप्य है, असीम है। मूढ़ जन असंतोषयुक्त जीवन जीते हैं, जबकि अमोह चेतना वाले व्यक्ति संतोष को धारण करते हैं। संतोष में जो सुख है, वह पदार्थ की लालसा में नहीं होता।

महेच्छ, अल्पेच्छ व अनिच्छ शब्दों की व्याख्या करते हुए आचार्यवर ने कहा--'अतीव इच्छा वाला महेच्छ, अल्पीकरण करने वाला अल्पेच्छ तथा इच्छाविरक्त अनिच्छ कहलाता है। श्रावक के बारह व्रतों में पांचवां व्रत है--इच्छा परिमाण। श्रावक पूर्ण अपरिग्रही नहीं हो सकता। साधु त्यागी होता है। जैन वाङ्मय में साधु के लिए 'अनगार' शब्द प्रयुक्त होता है। साधु के कोई घर नहीं होता, तभी उसे अनगार कहा जाता है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी द्वारा प्रदत्त विसर्जन सूत्र की चर्चा करते हुए आर्चावर ने कहा--'गृहस्थ अपने जीवन में अर्थ का सीमाकरण कर सकता है। धन का सीमाकरण करना इच्छा परिमाण है। गृहस्थ यह सोचे कि मेरी इच्छाओं की कोई सीमा है या नहीं ? एक अवस्था आने के बाद व्यक्ति व्यवसाय व परिवारगत दायित्वों से निवृत्त होने की बात सोचे और यथासंभव मोह-माया से विरत होकर यथाशक्ति संयममय जीवन जीने का प्रयास करे।'

आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व मंत्री मुनिश्री ने कहा--'व्यक्ति पदार्थ के पीछे दौड़ रहा है और नीति-अनीति से आंखें मूंदे हुए है। व्यक्ति यह सोचे कि पदार्थ की प्राप्ति पुण्यसापेक्ष है। पदार्थ के प्रभाव में व्यक्ति धर्म को छोड़ देता है। अनुकूलता की स्थिति में जो धर्म में रत रहता है, वह अपनी अनुकूलता की अवधि को प्रलंब कर देता है। व्यक्ति अपने जीवन में संयम की चेतना को पुष्ट करता रहे।'

कार्यक्रम में ग्वालियर से समागत संघ की ओर से बहनों ने गीत और सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री अशोक बैद ने अपने वक्तव्य में आचार्यप्रवर से ग्वालियर पधारने की प्रार्थना की। उपासिका श्रीमती तारा दूगड़ ने गीत का संगान किया। स्मारिका रूप में प्रकाशित तेयुप जयपुर का प्रतिवेदन पूर्व मंत्री श्री हितेश भांडिया ने पूज्यवर को भेंट किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

जय तुलसी विद्या पुरस्कार समर्पित

आज मध्याह्न में पूज्यवर की पावन सन्निधि में जैन विश्वभारती द्वारा प्रवर्तित व चौथमल कन्हैयालाल सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रायोजित 'जय तुलसी विद्या पुरस्कार' गणाधिपति तुलसी जैन इंजीनियरिंग कालेज वेल्लूर को प्रदान किया गया। स्वागत भाषण जैन विश्वभारती के मंत्री श्री बंशीलाल बैद ने किया। पुरस्कार जैविभा के अध्यक्ष श्री ताराचन्दजी रामपुरिया, श्री बंशीलाल बैद, श्री बाबूलाल सेठिया ने प्रदान किया। कालेज की ओर से चेयरमैन श्री प्यारेलाल पितलिया श्री अमरचन्द लूंकड़, ट्रस्टी श्री धर्मचन्द लूंकड़ ने स्वीकार किया। कालेज प्रबन्धन ने पुरस्कार में प्राप्त दो लाख रुपये की राशि पुनः जैन विश्वभारती को साहित्य संवर्द्धन योजना के अन्तर्गत प्रदान की। इतनी ही राशि जैन विश्वभारती संस्थान को प्रदान की गई। कालेज की ओर से श्री पीतलिया व ट्रस्ट की ओर से श्री विजयसिंह सेठिया के वक्तव्य हुए। आभारज्ञापन ट्रस्टी श्री मोहनलाल छाजेड़ व संचालन श्री पारसमल बच्छावत ने किया। पूज्य आचार्यप्रवर का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ।

मूल्यवान उपलब्धि है विश्वास

८ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'जिनेश्वर-तीर्थंकर का भक्त सदैव अपने धर्मदेव के प्रति अनुरक्त रहता है, उनकी समर्पितभाव से आराधना करता है। उनके द्वारा प्रवर्तित मार्ग पर चलना भाव पूजा है। यह भावपूजा ही सबके लिए श्रेयस्कर है। सुश्रावक की श्रद्धा सदैव एक जगह केन्द्रित रहनी चाहिए। किसी भी स्थिति में व्यक्ति विचलित न हो।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'मनुष्य की अनेक वृत्तियों में एक वृत्ति है--माया। व्यक्ति पाप तो करता है, किन्तु पापी कहलाना नहीं चाहता। गलत काम करके भी सुनाम चाहता है। व्यक्ति अपनी भूल को छिपाने का प्रयास न करे। गुरु के सम्मुख अपनी भूल को सरलता से स्वीकार करे। सरलता और सत्य का संबंध है तो झूठ व कपट का भी अपना संबंध है। सरल व्यक्ति के जीवन में धर्म संस्थित होता है। माया अविश्वास का घर है। जहां सरलता है, वहां आत्मशुद्धि है, विश्वास भी है। विश्वास जीवन की एक मूल्यवान उपलब्धि है। साधना के क्षेत्र में सरलता की बहुत महत्ता है। ऋजु व सत्य साधक व्यक्ति का आभावलय पवित्र होता है।'

प्रेरणा के स्वर में आचार्यवर ने कहा--'मन, वाणी व शरीर की चेष्टा में जिसके एकरूपता है, वह महात्मा है। जिसके जीवन में एकरूपता दृष्टिगत नहीं होती, वह दुरात्मा होता है। व्यक्ति अपने कथनी व करनी की समानता का प्रयोग करे। वह अपने जीवन में निश्छलता, सरलता व सत्यता रखे।'

कार्यक्रम में वीरगंज (नेपाल) की बहनों ने गीत व वहां की सभा के अध्यक्ष श्री अशोक बैद ने पूर्वांचल यात्रा में वीरगंज पदार्पण की प्रार्थना प्रस्तुत की। प्रवचन में कार्यक्रम से पहले वीतराग समवरण में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के सैंतीसवें वार्षिक अधिवेशन का शुभारंभ आचार्यवर के मंगलपाठ से हुआ। इसके पूर्व अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए।

साधना चले लोभ के नियंत्रण की

९ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'ज्ञानयोग, भक्तियोग व ध्यानयोग साधना के मूल अंग है। ज्ञानयोग के साथ भक्तियोग निरन्तर चले तो सामान्यतया व्यक्ति अपने स्वीकृत पथ से भटकता नहीं। भक्ति में सब कुछ निहित है। अपने गुरु के प्रति समर्पण का भाव हर धार्मिक के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। इस समर्पण भाव के बल पर व्यक्ति मार्गगत कठिनाइयों से उबरने में सक्षम हो सकता है। शिष्य का समर्पण और गुरु का अनुग्रह एक ऐसी युति निर्मित करता है, जिससे शिष्य की साधना फलीभूत बन जाती है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'लोभ आदमी की एक मौलिक प्रवृत्ति है तो यह पाप का मूल भी है। चार कषायों में सबसे अंत में समाप्त होने वाला लोभ है। लोभ के अनस्तित्व में क्रोध, अहंकार व माया का भी अस्तित्व नहीं रहता।' साधुत्व को निस्तेज करने वाले पांच कारकों का विवेचन करते हुए पूज्य आचार्यवर ने कहा--'जो आत्मश्लाघा करता है, वह अपनी साधना को कमजोर करता है। इसी तरह परनिन्दा भी एक कारक है। तीसरा रसलोलुपता है। रसनेन्द्रिय को जीतना कुछ कठिन है। मनोज्ञ पदार्थों को खाने का त्याग करने से आसक्ति का भाव न्यून होता है। चौथा कारक तत्त्व है उपस्थ-विषय वासना। विकृति के उत्पन्न होने की स्थिति से बचें। इन्द्रिय विजय की साधना से साधक अपनी साधना को परिपुष्ट बना लेता है। मुनि कषाय को उपशान्त रखे तो उसकी साधना प्रखरतर बन जाती है। साधु और गृहस्थ दोनों में लोभ नियंत्रण की साधना चलती रहे।' कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

साहित्यकार श्री नर्मदाप्रसाद उपाध्याय की पुस्तक 'जैन चित्रांकन परम्परा' बुरहानपुर निवासी श्री शेखरचन्द जैन व श्री किरीटभाई ने पूज्यवर को भेंट की। श्रीमती प्रिया अनिल खटेड़ (सरदारशहर-बेंगलुरु) की पुस्तक 'सचित्र भगवान महावीर जीवनवृत्त' श्री कन्हैयालाल खटेड़ ने पूज्यवर को भेंट की। पुस्तक के बारे में सुधा दूगड़ ने जानकारी दी। साध्वी गुप्तिप्रभाजी के नाभा प्रवास में जैनेतर परिवारों से भ्रूणहत्या रोकथाम के ५११ फार्म नाभा महिला मंडल की अध्यक्ष व राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सदस्य श्रीमती अरुणा सिंगला ने भेंट किए। अ.भा. तेरापंथ महिला मंडल द्वारा प्रवर्तित तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत प्रकाशित आचार्यश्री भिक्षु प्रणीत व समाजभूषण श्रीचन्दजी रामपुरिया द्वारा विवेचित पुस्तक नव नदार्थ (निर्जरा, बंध, मोक्ष) पुस्तक पूज्यवर को भेंट की गई। इस शृंखला की तीन पुस्तकें पूर्व में प्रकाशित हो चुकी हैं। इस संदर्भ में मंडल की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैंगानी ने जानकारी दी।

त्रिदिवसीय ज्ञानशाला प्रशिक्षण प्रवेश शिविर का समायोजन

गत २८ सितम्बर को पूज्यप्रवर के सान्निध्य एवं तेरापंथी महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा तीसरा त्रिदिवसीय ज्ञानशाला अध्यापन प्रशिक्षण प्रवेश शिविर का आयोजन हुआ। शिविर के इक्कीस संभागी भाई-बहनों में मुख्यतः कोलकाता के थे। शिविर में मुनि उदितकुमारजी, मुनि हिमांशुकुमारजी, श्री डालमचन्द नौलखा, श्री बजरंग जैन एवं श्री राजेन्द्र मोदी ने प्रशिक्षण दिया। शिविर संयोजक श्री महेन्द्र कोचर, सहसंयोजक श्री शिवकुमार ढेलड़िया व श्री संपत चोपड़ा थे। पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन में ऐसे शिविर को दूरगामी हित की दृष्टि से उपयोगी बताया और कहा--'ज्ञानशाला प्रशिक्षक उपासक बनने व उपासक ज्ञानशाला प्रशिक्षक बनने का प्रयास करें तो कार्य में सुगमता हो सकती है।'

विशिष्ट व्यक्तियों का आगमन

गत सप्ताह जिन विशिष्ट व्यक्तियों ने आचार्यवर के दर्शन कर पावन पाथेय प्राप्त किया, उनके नाम इस प्रकार हैं--

२ अक्टूबर - श्रीमती रंजू रामावत, महासचिव राजस्थान प्रदेश यूथ कांग्रेस।

३ अक्टूबर - श्री अरुण चतुर्वेदी, अध्यक्ष- राजस्थान प्रदेश भाजपा, श्री प्रमोद सामर, मंत्री राजस्थान प्रदेश भाजपा, श्री अमराराम चौधरी, पूर्व गृहराज्यमंत्री राजस्थान, श्री जिनेन्द्रराय लोढ़ा, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष-भाजयुमो, श्री महेश बी.चौहान, नगरपालिकाध्यक्ष--बालोतरा, श्री देवेन्द्र लेघा, अध्यक्ष-बाडमेर जिला भाजयुमो, श्री रतनलाल बोहरा, महामंत्री बाड़मेर जिला भाजपा। श्रीमती वीणा प्रधान, जिला कलक्टर बाडमेर।

४ अक्टूबर - श्री जसराज चोपड़ा, पूर्व न्यायाधीश राजस्थान उच्च न्यायालय।

५ अक्टूबर - श्री जितेन्द्र जैन, महानिरीक्षक पंजाब पुलिस।
७ अक्टूबर - श्री गोपाराम मेघवाल, अध्यक्ष राजस्थान अनुसूचित जाति आयोग। श्री हीरालाल विश्नोई, उपाध्यक्ष राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी।

स्मृति-संबल

- बारणी-जोधपुर निवासी श्री मनोहरलाल सुराणा (सुपुत्र-स्व. मिश्रीमलजी सुराणा) का देहान्त हो गया। वे संघ के समर्पित श्रावक थे। उनके मन में धर्म के प्रति गहरी रुचि थी।
- राजलदेसर निवासी निर्मली (बिहार) प्रवासी श्री विजयराज बैद का जयपुर में देहावसान हो गया। वे निर्मली तेरापंथी सभा के अध्यक्ष थे। उनकी धर्मपत्नी लक्ष्मीदेवी तपस्विनी श्राविका है। उन्होंने इक्कीस तक की लड़ी व दो वर्षीतप सहित कई तपस्याएं की हैं। परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- लूणकरणसर निवासी श्रीमती चंपादेवी बोथरा (धर्मपत्नी-श्री लिखमीचन्दजी बोथरा) का स्वर्गवास हो गया। श्रद्धाशील श्राविका चंपादेवी के आजीवन नवकारसी, रात्रि भोजन व जमीकन्द का परित्याग, संवत्सरी पर अष्टप्रहरी पौषध, दीपावली पर तेला, तेरस को मौन उपवास, सावन व भाद्रव में एकान्तर तप, प्रतिदिन पांच सामायिक, प्रवास में प्रतिदिन प्रवचन श्रवण जैसे कई त्याग-प्रत्याख्यान थे। उन्होंने एक वर्षीतप सहित आठ तक की लड़ी भी संपन्न की।
- राजलदेसर निवासी टाटानगर-जमशेदपुर प्रवासी श्रीमती झमकूदेवी बैद (धर्मपत्नी-स्व. श्रीचन्दजी बैद का देहान्त हो गया। वह एक धर्मनिष्ठ श्राविका थी।
- अकोला-चित्तौड़गढ़ निवासी श्री भंवरलाल चपलोत का नवासी वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। अकोला का चपलोत परिवार समर्पित व श्रद्धालु परिवार है।
- राजगढ़ निवासी दिल्ली प्रवासी श्री मोतीलाल नाहटा (सुपुत्र-स्व. चंपालालजी नाहटा) का निधन हो गया। श्री नाहटा श्रद्धालु श्रावक थे। उनके अग्रज श्री नथमलजी नाहटा अणुव्रत के कार्यकर्ता हैं। राजगढ़ का नाहटा परिवार धर्मसंघ का श्रद्धालु परिवार है।
- दिल्ली निवासी श्रीमती संतोषदेवी जैन (धर्मपत्नी-लाला हरीचन्द जैन) का लंबी बीमारी में देहान्त हो गया। दिल्ली के रोहिणी, सेक्टर तीन में विचरने वाले साधु-साध्वियों का प्रायः उनके घर पर प्रवास होता है। मूलतः यह पंजाबी परिवार धार्मिक है। संतोषदेवी धर्मपरायण श्राविका थीं। लाला हरीचन्द रोहिणी सभा के अध्यक्ष रह चुके हैं। वे दिल्ली के अच्छे कार्यकर्ता हैं।
- सुजानगढ़ निवासी दिल्ली प्रवासी श्री कन्हैयालाल भुतोड़िया का देहावसान हो गया। सहज जीवन जीने वाले श्री भुतोड़ियाजी के पिछले बारह वर्ष विशेष धर्माराधना में बीते। नियमित दो सामायिक, स्वाध्याय, तपस्या आदि का क्रम चलता रहा। उन्होंने समतामय जीवन जीया।
- किराड़ा बड़ा निवासी कोलकाता प्रवासी श्री राजेन्द्रकुमार नाहटा (सुपुत्र-स्व. रतनलालजी नाहटा) का बावन वर्ष की उम्र में देहान्त हो गया। कार्यकर्ता निर्माण का मंच 'जैन कार्यवाहिनी' एवं 'भिक्षु भजन मंडली' के वे सक्रिय सदस्य थे। कोलकाता सभा के संयुक्त सचिव, पूर्वांचल सभा के मंत्री, ज्ञानशाला के चार वर्ष तक प्रभारी सहित अनेक संस्थाओं में उन्होंने अपनी सेवाएं दीं। साधु-साध्वियों के लेखन का कार्य खूब किया। राजेन्द्रजी श्रद्धाशील, अच्छे संगायक व समर्पित कार्यकर्ता थे। उनकी पत्नी शकुन्तला, पुत्र प्रतीक सहित पारिवारिक सदस्यों में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- श्रीडूंगरगढ़ निवासी कोलकाता प्रवासी श्री धर्मचन्द पुगलिया का स्वर्गवास हो गया। वे अनेक संघीय और सामाजिक संस्थाओं से जुड़े रहे। पश्चिम बंगाल अणुव्रत समिति के मंत्री, जैन भारती के वे संपादक रहे। उदार वृत्ति के श्री पुगलियाजी ने विभिन्न संस्थाओं को अनुदान व सहायता प्रदान की। प्रतिदिन सामायिक व जप उनका नियम था। उनके सुपुत्र भीखमचन्द पुगलिया जैन विश्वभारती

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 13-10-2012 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

के चार वर्ष तक मंत्री व तुलसी सेवा संस्थान हास्पिटल, श्रीडूंगरगढ़ के भी मंत्री रहे। श्रीडूंगरगढ़ का पुगलिया परिवार धर्मसंघ का श्रद्धालु और समर्पित परिवार है।

जीवनविज्ञान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर : एक सूचना

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में जसोल में जीवन विज्ञान अकादमी जैन विश्वभारती द्वारा आगामी २९ अक्टूबर से ३ नवम्बर तक जीवनविज्ञान प्रशिक्षक प्रशिक्षण की समायोजना की जा रही है। इस संदर्भ में अधिक जानकारी हेतु फोन नं. ०१५८१-२२२९७४ व मोबाइल नं.९९५००३९३१३ पर सम्पर्क किया जा सकता है।

मुनि मानवमित्रजी कालधर्म को संप्राप्त

८ अक्टूबर को लाडनूं (जैन विश्वभारती) सेवाकेन्द्र में स्थित मुनि मानवमित्रजी (सरदारशहर) कालधर्म को प्राप्त हो गए। उनके संदर्भ में आचार्यप्रवर के उद्‌गार पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती इचरजकंवर बलवंतराज भंडारी) की ३६वीं पुण्यतिथि पर उनके सुपुत्र व पुत्रवधू शासनसेवी श्री सिद्धराज भंडारी, श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती जतन भंडारी, पौत्र एवं पौत्रवधू डा. मनीष एवं डा. शालिनी भंडारी, प्रपौत्र मिलन एवं सयन भंडारी, जोधपुर-जयपुर द्वारा प्रदत्त।

३१००/- स्व. श्रीमती चंपाबाई पीपाड़ा (धर्मपत्नी-श्री उत्तमचन्दजी पीपाड़ा, मुसालिया-बेंगलुरु) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू कुशलराज कमला, अनिलराज-मीनाक्षी सुपौत्र अभिषेक, मुदित, सुपौत्री हर्षिका, आकांक्षा पीपाड़ा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती वरजीदेवी भूरा (धर्मपत्नी-श्री महालचन्दजी भूरा, गंगाशहर) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू अनिलकुमार-सुनीता, सुपौत्र यश, सुपौत्री गौरी भूरा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- अनशनधारी श्राविका स्व. श्रीमती मोघीबेन शान्तिलाल मेहता (ऊमजी मेहता परिवार, वाव) की पुण्यस्मृति एवं उनके परिवार के प्रायोजकत्व में जसोल पहुंचे यात्रा संघ द्वारा गुरुदर्शन एवं उपासना करने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू मेहता नटवारलाल-कोकिलाबेन, सुपौत्र दिलीप, विजय, पौत्रवधू भारती, संगीता, प्रपौत्र हर्ष, निपुण, प्रपौत्री हेतांशी, दक्षी मेहता द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती मिठूदेवी रांका (धर्मपत्नी-स्व. भूरालालजी रांका, आसीन्द) के प्रभावक संथारे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पूत्रवधू नरेन्द्र-हेमलता, श्रीमती संतोषदेवी व सुपौत्र रवि रांका द्वारा प्रदत्त।

२१००/- सिद्धा संघवी (सुपुत्री शीतल-गिरीशजी संघवी, मुम्बई) के शुभ जन्म के उपलक्ष्य में उनके नाना-नानी, सुखलाल-निर्मला, मामा-मामी वैभव-डिम्पल, तरुण, मिस्टी सियाल, मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता—

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, पो. जसोल-३४४०२४ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ९६८००५५३८१, ९३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी**।